पशुपालक मित्र 2(1): 3-5; जनवरी, 2022
ISSN: 2583-0511 (Online)

शीत ऋतु में ब्रायलर मुर्गियों की देखभाल

डॉ. विपिन मौर्य

पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान संकाय
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

कुक्कुट पालन भूमिहीन, सीमान्त किसानों तथा बेरोजगार नौजवानों को स्वरोजगार उपलब्ध कराने का एक प्रभावी साधन है ।मुर्गी पालन अच्छे मुनाफे वाले व्यवसायों में से एक है। कुक्कुट व्यवसाय लगातार 8-10 प्रतिशत वार्षिक वृद्धि की दर से बढ़ रहा है।इस व्यवसाय में कम कीमत पर अधिक खाद्य पदार्थ प्राप्त होता है । उदाहरण के रूप में ब्रायलर मुर्गे का एक किग्रा शरीर भार 2 किग्रा दाना मिश्रण खिला कर प्राप्त किया जा सकता है । इसी प्रकार मुर्गी से एक दर्जन अंडे पाने के लिये उसे सिर्फ़ 2.2 किग्रा दाना मिश्रण ही खिलाना जरूरी होता है । मुर्गी की खाद्य परिवर्तन क्षमता गाय और सूअर की तुलना में भी बहुत बेहतर होती है ।इस व्यवसाय की खासियत है कि इसे कम लागत से शुरू किया जा सकता है और इसमें कमाई जल्दी शुरू हो जाती है, क्योंकि ब्रायलर मुर्गियां 40 से 45 दिन में तैयार हो जाती हैं।

ठंड के मौसम में कुक्कुट पालक एवं किसान भाई निम्नलिखित सावधानियाँ एवं सुझाव अपनाकर इस मौसम मे उतम प्रबंधन कर ज्यादा से ज्यादा लाभ कमा सकते है ।शीतऋतु में कुक्कुट पालन करते समय कुछ महत्वपूर्ण बिंदुओं का ध्यान रखने की आवश्यकता होतीहै।

- शीतऋतु के आगमन से पहले मुर्गियों के बाड़े की मरम्मत करवायें; खिड़कियाँ तथा दरवाजे ठीक-ठाक हालत में होने चाहिए।पुराना बुरादा, पुराने बोरे, पुराना आहार एवं पुराने खराब पर्दे इत्यादि बदल देना चाहिए । दाना गोदाम की सफाई करनी चाहिए एवं कॉपर सल्फेट युक्त चूने के घोल से पुताई कर देनी चाहिए ऐसा करने से फंगस का प्रवेश मुर्गीदाना गोदाम में रोका जा सकता है।
- सर्दी के मौसम में चूजों को ठंड से बचाने के लिए गैस ब्रूडर, बांस के टोकने के ब्रूडर, चद्दर के ब्रूडर, पट्रोलियम गैस, सिगड़ी, कोयला, लकड़ी,हीटर इत्यादी की तैयारी चूजे आने के पूर्व ही कर लेना चाहिए।
- शीतऋतु में चूजा घर का तापमान 95ºF होना चाहिए। चूजे के आते ही उसे बक्से समेत कमरे के अन्दर ले जायें, जहाँ ब्रूडर रखा हो । अब एक एक करके सारे चूजों को ओ आर एस पाउडर या ग्लूकोज मिला गुनगुना पानी पिला कर ब्रूडर के नीच छोड़ते जायें। बक्से में अगर बीमार चूजा है तो उसे हटा दें।

➢सर्दियों में चूज़ों को सुबह के समय मंगवायें, शाम या रात को बिलकुल डिलीवरी नहीं कराएँ क्योंकि शाम के समय ठण्ड बढती चली जाती है। शेड के परदे चूजों के आने के 24 घंटे पहले से ही ढक कर रखें।चूजों के आने के कम से कम 2 से 4 घंटे पहले ब्रूडर चालू कर देना चाहिए। पानी पहले से ही ब्रूडर के नीचे रखें, इससे पानी भी थोडा गर्म हो जायेगा। शीतऋतु में चूजों को ठण्ड लगने से सर्दी-खांसी की बीमारी होने का डर रहता है इसलिए सर्दी में मुर्गियों को अधिक से अधिक ध्यान देने की जरूरत पड़ती है ।

➢चूज़ों के सही प्रकार से विकास के लिए ब्रूडिंग सबसे ज्यादा आवश्यक है। ब्रायलर फार्म का पूरा व्यापार पूरे तरीके से ब्रूडिंग के ऊपर निर्भर करता है। अगर ब्रूडिंग में गलती हुई तो आपके चूज़े 7-8 दिन में कमज़ोर हो कर मर जायेंगे या आपके सही दाना के इस्तेमाल करने पर भी उनका विकास सही तरीके से नहीं हो पायेगा। पहला तथा दूसरा सप्ताह चूजों के जीवन के लिए बहुत नाजुक होता है । इस लिए इन दिनों में अधिक देखभाल की आवश्यकता होती है। अच्छी देखभाल से मृत्यु दर कम की जा सकती है।पहले सप्ताह में ब्रूडर में तापमान 90°F होना चाहिए। फिर दूसरे सप्ताह से चौथे सप्ताह तक 5-5 डिग्री तापमान कम करते हुए ,ब्रूडर का तापमान उतना कर देना चाहिए की चूजें ठंढ से बचे रहें और उन्हें ठंढ ना लगे । सामान्यतः ब्रूडर का तापमान कम करते हुए 70 डिग्री फारेनहाइट तक कर देना चाहिए।

➢यदि चूजे ब्रूडर के नीचे बल्ब के नजदीक एक साथ जमा हो जायें । तो समझना चाहिए के ब्रूडर में तापमान कम हैं। तापमान बढ़ाने के लिए अतिरिक्त बल्ब का इन्तजाम करें या जो बल्ब ब्रूडर में लगा है, उसको थोडा नीचे करके देखें। यदि चूजे बल्ब से काफी दूर किनारे में जाकर जमा हो तो समझना चाहिए ब्रूडर में तापमान ज्यादा हैं। ऐसी स्थिति में तापमान कम करें। उपयुक्त गरमी मिलने पर चूजे ब्रूडर के चारों तरफ फैल जायेंगे । वास्तव में चूजों के चाल चलन पर नजर रख और समझकर ही तापमान को नियंत्रित किया जा सकता है।

➢ठण्ड के मौसम में खासकर सुबह में मुर्गीघर के अन्दर कम से कम दो घंटों तक धूप का प्रवेश अतिआवश्यक है। अतः मुर्गीघर का निर्माण इस बिन्दू को ध्यान में रखते हुए उसकी लंबाई पूर्व से पश्चियम दिशा की ओर होनी चाहिए । जाड़ें में कम से कम 3 से 5 इंच की बिछाली मुर्गीघर के फर्श पर डालें जो की अच्छी गुणवत्ता की हो । शीतऋतु में मुर्गी आवास को गरम रखने के लिए ध्यान रखें की बिछावन सदा सूखी और भुरभुरी रहे । बुरादे के सीलन वाले या गीले हिस्से को तुरंत हटा दें।

ISSN: 2583-0511 (Online)

➢आवास के ऊपर प्लास्टिक, बोरे, फट्टी आदि बिछा देना चाहिए एवं साइड के पर्दे मोटे बोरे और प्लास्टिक के लगाना चाहिए, ताकि वे ठंडी हवा के प्रभाव को रोक सकें। रात्रि के समय खुली जगहों व जालियों पर्दों से ढक दें। इसमें खाली बोरी, जूट के बोरे और प्लास्टिक आदि का इस्तेमाल किया जा सकता है। पर्दों की निचली जगह पर बाँस बांध दें ताकि वे तेज हवाओं से ना उड़े और मुर्गियों को ठंडी हवाएं ना लगें।अंगीठी या स्टोव मुर्गीघर में जला सकते हैं, परन्तु अंगीठी अंदर रखने से पहले इसका धुआँ बाहर निकाल दें । इस से न केवल पक्षियों को आराम मिलेगा बल्कि मुर्गी आवास का वातावरण भी खुसनुमा और गर्म बना रहेगा।

➢शीतऋतु में मुर्गियों की भूख बढ़ जाती है अत: उनके दोने (फीड ट्रफ) हमेशा दाने (मॅश) से भरे होने चाहिए। उनके पोषण पर समुचित ध्यान दें। शीतऋतु में मुर्गियों को ज्यादा ठंडा जल ना पिलाये बल्कि गुनगुना पानी देना बेहतर होगा। पाँचवें या छठे दिन ब्रायलर चूजों को रानीखेत एफ का टीका आँख तथा नाक में एक –एक बूँद दें।14 वें या 15 वें दिन गम्बोरो का टीका, आई.बी.डी. आँख तथा नाक में एक –एक बूँद दें।मरे हुए चूजे को कमरे से तुरन्त बाहर निकाल दें। नजदीक के अस्पताल या पशुचिकित्सक से पोस्टमार्टम करा लें। पोस्टमार्टम कराने से यह मालूम हो जायेगा की मौत किस बीमारी या कारण से हई है।

➢मुर्गियों का रोजाना निरीक्षण करें; सुस्त मुर्गियों की पशुचिकित्सक द्वारा जांच करवाकर दवा दें।

शीतऋतु में कुक्कुट पालन करते समय अगर उपरोक्त बातों को ध्यान में रखा जाए तो हमारे कुक्कुटपालक व किसान भाई इस विपरीत मौसम में भी कुक्कुट व्यवसाय में मुर्गीयों को ठंड से तो बचाएंगे ही और साथ ही अच्छा उत्पादन कर अधिक लाभ भी कमा सकेंगे।